अन्तरधार्मिक परिसम्वाद सम्बन्धी

परमधर्मपीठीय परिषद

ख्रीस्तीय और जैन:
संवर्धित भ्रातृपूर्ण और शांतिपूर्ण विश्व के लिए मिलकर आशा बोयें

महावीर जयन्ती जन्म कल्याणक दिवस 2025

वाटिकन सिटी

ख्रीस्तीय और जैन: संवर्धित भ्रातृपूर्ण और शांतिपूर्ण विश्व के लिए मिलकर आशा बोयें

प्रिय मित्रो,

परमधर्मपीठीय अन्तरधार्मिक परिसम्वाद विभाग आपको इस वर्ष 10 अप्रैल को मनाई जा रही तीर्थंकर महावीर जयंती के लिए हार्दिक बधाइयाँ और शुभकामनाएं अर्पित करता है। इस पर्व पर केंद्रित सभी उत्सव आपके हृदयों को शांति और आनन्द से भर दे तथा आपके परिवारों एवं समुदायों में प्रेम और एकता के बंधन को और अधिक सुदृढ़ करे!

यह दुख की बात है कि आज विश्व के कई भागों में लोगों में आशा की कमी या निराशा बढ़ती जा रही है। इसके कई कारण हैं, ग़रीबी से लेकर आपदाएँ, युद्ध, पर्यावरण विनाश, जातीयता, धर्म और राष्ट्रीयता के नाम पर समाज में विभाजन और हिंसा, आम जनता में उदासीनता की बढ़ती भावना तथा व्यक्तियों, समूहों और राष्ट्रों के बीच लगातार अमानवीयता का प्रदर्शन।

जटिल परिस्थितियों में शांति स्थापना में लगे लोगों के बीच भी हम आशा का संकट देख रहे हैं, क्योंकि उनके प्रयास प्रायः निष्फल प्रतीत होते हैं। समाज में कुटिलता, वश्यता और पराजयवाद की भावना बढ़ रही है। इस संदर्भ में, हम आपके साथ कैसे जैन और ईसाई दोनों एक अधिक भ्रातृपूर्ण और शांतिपूर्ण विश्व के निर्माण के लिए आशा के बीज बो सकते हैं विषय पर कुछ विचार साझा करना उचित समझते हैं।

सन्त पापा फ्रांसिस के शब्दों में आशा "हृदय का वह सदगुण है जो अंधेरे में खुद को बंद नहीं करता, अतीत पर नहीं रुकता, वर्तमान में नहीं भटकता, बल्कि कल को स्पष्ट रूप से देख सकता है।"[1] भविष्य के बारे में हमारी अनिश्चितताओं और चिंताओं के बीच भी यह "आने वाली अच्छी चीज़ों की इच्छा और प्रत्याशा" है।[2] आशा, ईश्वरीय उपस्थिति में और ईश्वरीय कृपा पर विश्वास से उत्पन्न होती है तथा मानव हृदय में निहित मानवता की असीम भलाई द्वारा कायम रहती है। यह जनकल्याण के लिए अच्छाई को चुनने से परिपोषित और विकसित होती है। इसका मतलब यह है कि जितना अधिक व्यक्ति और समुदाय आशा के वाहक बनते हैं तथा जन-कल्याण एवं भ्रातृपूर्ण सह-अस्तित्व का पक्ष ठान लेते हैं, आशा के बीज बोना उतना ही आसान हो जाता है।

"आशा के महान मार्गों में से एक जिस पर चलना है वह है भाईचारा," क्योंकि □संसार की आशा भाईचारे में ही बसती है□[3] भाईचारा निश्चित रूप से शांतिपूर्ण विश्व के लिये आशा की कुंजी है। वे पुरुष और महिलाएँ जो विविधता और मतभेदों के बीच भाईचारे के बंधन को मज़बूत करते हैं, सभी के लिए सुरक्षित भविष्य की आशा के बीज बोते हैं। वे एक-दूसरे के साथ भ्रातृत्व प्रेम से जीते और पोषित करते और उसको बढ़ावा देते हुए

आपस में ठोस रूप से आशा को जागृत करते हैं। इस "आशा के मार्ग" पर कई चुनौतियाँ आएंगी जिन्हें मानव बंधुत्व की शक्ति तथा कभी भी उम्मीद न खोने के दृढ़ संकल्प से दूर किया जा सकता है।

---

[1] *Hope, आत्मकथा*, सह-लेखक कार्लो मुसो, पेंगुइन रैंडम हाउस एलएलसी, 2025, पृष्ठ 291.

[2] बुल ऑफ इंडिक्शन सामान्य जयन्ती वर्ष 2025 का आदेश पत्र *स्पेस नॉन कॉन्फुन्दित*, 9 मई 2024, 1.

[3] सन्त पापा फ्रांसिस *प्रवचन, ईश माता मरियम के महापर्व की पूर्व सान्ध्य वन्दना, व्यतीत वर्ष के लिये धन्यवाद ज्ञापन प्रार्थना*, 31 दिसंबर 2024.

वास्तव में शांति "बाधाओं और परीक्षणों के बीच आशा की यात्रा है।"[4] मानव इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि बाधाओं और परीक्षणों को शांति के लिये अवसरों के रूप में बदला जा सकता है, बशर्ते कि अच्छे इरादे वाले सभी पुरुष और महिलाएं आशा से प्रेरित होकर, परिश्रम, साहस और दृढ़ता के साथ काम करें।

हमसे आह्वान किया जाता है कि हम अपनी आध्यात्मिक परंपराओं, जो "आशा के स्रोत" हैं, से प्रेरणा और बल प्राप्त करते हुए मानव बंधुत्व की नींव पर आधारित शांतिपूर्ण विश्व के लिये आशा के प्रसारण हेतु अपने प्रयासों को सघन करें। "यदि शांति 'एक खोखला शब्द' मात्र रह जाएगा और यदि हमने अपने ठोस कार्यों के माध्यम से पृथ्वी के लोगों के साथ मिलकर इसे हासिल नहीं किया तो भावी पीढ़ियाँ हमारे विरुद्ध खड़ी हो जाएंगी और हमारी विफलता के लिए हमें दोषी ठहराएँगी।"[5] अस्तु आशा को परिवारों से शुरु होकर जो 'आशा के कारखाने' हैं सभी स्तरों पर परिश्रम के साथ परिपोषित करने की आवश्यकता है। बच्चों में आशा के महान सदगुण को विकसित करने में माता-पिता और बुजुर्गों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिससे कि उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार किया जा सके। धार्मिक नेताओं और सचमुच सभी विश्वासियों का यह नैतिक कर्तव्य है कि वे अपने जीवन और कार्यों के साक्ष्य से शांति के लिये आशा की संस्कृति का पोषण करें। शैक्षिक संस्थान और सोशल मीडिया भाईचारा और एकजुटता को प्रोत्साहन देने वाली गतिविधियों के माध्यम से आशा के सद्गुण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं तथा शांति पनपने में प्रोत्साहन दे सकते हैं।

अपनी-अपनी धार्मिक परंपराओं में सुदृढ़ विश्वासियों और सह-तीर्थयात्रियों के रूप में और साझा विश्वासों, आशाओं, उत्कंठाओं तथा मानवता के प्रति ज़िम्मेदारी की भावना के साथ, आइए हम, ईसाई और जैन, अन्य धार्मिक परंपराओं और सभी शुभचिन्तकों के साथ हाथ मिलाते हुए अपने-अपने तरीके से, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, भ्रातृप्रेम और आशा की संस्कृति को बढ़ावा दें। इस प्रकार सभी को आशा के बीज बोने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करें।[6]

इस वर्ष 'नोस्त्रा एताते' की 60 वीं वर्षगांठ भी है जो काथलिक कलीसिया और अन्य धर्मों के बीच संबंधों पर द्वितीय वाटिकन महासभा का वह घोषणा-पत्र है जिसने सामंजस्यपूर्ण और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए आशा को फैलाने की दिशा में अंतरधार्मिक संवाद के महत्व पर ज़ोर दिया है। हमारी मंगलकामना है कि यह स्मरणोत्सव हममें और सबमें विश्व शांति के लिए भ्रातृपूर्ण संवाद और सहयोग की भावना को और अधिक नवीनीकृत करे!

हम आपको एक बार फिर श्री महावीर जन्म कल्याणक दिवस की शुभकामनाएँ अर्पित करते हैं!

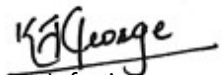

कार्डिनल जॉर्ज जैकब कूवकाड

प्रीफेक्ट

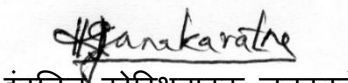

मोन्सिन्ज्योर इंदुनिल कोडिथुवाक्कु जनकरत्ने कंकनमलगे

सचिव

---

[4] सन्त पापा फ्रांसिस, *विश्व शांति दिवस 2020 के उपलक्ष्य में जारी संदेश*, 1 जनवरी 2020, 1.

[5] [5] *Hope, आत्मकथा पूर्व उदधृत पृष्ठ.* 159

[6] दे. सन्त पापा फ्रांसिस, बुलाहट के लिए *विश्व प्रार्थना दिवस 2024 का संदेश*, 21 अप्रैल 2024

DICASTERY FOR INTERRELIGIOUS DIALOGUE
00120 Vatican City

Tel: +39.06.6988 4321
E-mail: dialogo@interrel.va
http://www.dicasteryinterreligious.va